घनआनँद

(सं० १७४६-१८१४)

घनआनँद रीतिमुक्त स्वच्छंद धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे । इनका जीवनवृत्त किंवदंतियों एवं प्रमाणों के आधार पर इस प्रकार है—

प्रथम गार्सां द तासी के 'इस्त्वार दे ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐं ऐंदुस्तानी' में, जिसका हिंदी-साहित्य-संबंधी अंश डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा 'हिंदुई साहित्य का इतिहास' नाम से अनूदित हुआ है, आनंद नाम के एक कवि का उल्लेख मिलता है । इसके विषय में इतिहासकार का मत है कि वह लोकप्रिय गीतों का रचयिता था और उसके कुछ पद्य डब्ल्यू० प्राइस द्वारा 'हिंदी ऐंड हिंदुस्तानी सेलेक्शंस' नामक ग्रंथ में संगृहीत हुए थे । इस उल्लेख से निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि आनंद नाम का व्यक्ति आनंदघन ही है या अन्य कोई । लोकप्रिय गीतों की रचना आनंदघन की पदावली हो सकती है । पर यह कल्पना मात्र है ।

इसके पश्चात् महादेवप्रसाद ने अपने 'साहित्यभूषण' में आनंदघन का संतोषजनक मात्रा में विवरण दिया था, पर वह ग्रंथ प्राप्य नहीं है । उसको आधार मानकर सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने 'माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ हिंदुस्तान' में इनका विवरण दिया है । उन्होंने अपने पूर्ववर्ती ठा० शिवसिंह सेंगर कृत 'शिवसिंह सरोज' का भी उपयोग किया था । दोनों के प्रमाण के आधार पर आनंदघन का विवरण देते हुए ग्रियर्सन ने इन्हें जाति का कायस्थ तथा बादशाह बहादुरशाह का मुंशी बताया है । मृत्यु से पूर्व ये कार्यमुक्त होकर वृंदावन चले गए थे और वहीं नादिरशाही आक्रमण में मथुरा में मारे गए । ग्रियर्सन ने,'कोकसार' के लेखक आनंदघन को, जिसका समय 'सरोज' के अनुसार सन् १६५४ है, इनसे अभिन्न माना है । साथ ही यह भी उल्लेख किया है कि ये ही कभी-कभी अपना नाम घनआनंद लिखते थे ।

रीवाँ महाराज श्री रघुराजसिंह जू देव ने अपने 'भक्तमाल' में (सं० १९००-१९३६) घनआनँद के जीवनवृत्त पर अपेक्षाकृत विस्तृत चर्चा की है और अपने कथ्य का आधार मथुरा की जनश्रुति बताई है—

घनआनँद की कथा अनेका ।
ब्रज में विदित अहैं सविवेका ।।
घनआनँद के विपुल कवित्ता ।
अबलौं हरत कविन के चित्ता ।।

बात इस प्रकार है । दिल्ली का कोई शाहजादा मथुरा में आया था । पर मथुरावासियों ने जूतों की माला पहनाकर उसके नगरागमन का सत्कार किया ।

इस पर वह बहुत क्रुद्ध हुआ और दिल्ली से अपनी सेना बुलाकर मथुरावासियों की मारकाट करवाई । जब यह घटना घट रही थी तब घनआनंद वंशीवट में बैठे भगवान् की भावना सखी-भाव से कर रहे थे । उनके हाथ में पान का बीड़ा था । खाने ही वाले थे कि भगवान् के रास-विलास का ध्यान आ गया और उसी में लीन हो गए । बीड़ा हाथ में ही रहा । भावना के बीच में ही भगवान ने स्वयं आकर अपना हाथ फैलाकर वह बीड़ा घनआनंद के मुख में लगा दिया । इस बीड़ा से जो मुखराग हुआ था उसे सब ने देखा था—

सोइ बीरी मुख मेलिगौ लगे मुरावन सोइ ।
सोइ बीरी की रागमुख प्रगट लख्यौ सब कोइ ।।

ऐसे सही साधक को भी यवनों ने तलवार से काट डाला पर घनआनँद के प्राण नहीं निकले । इस समय उन्होंने स्वयं भगवान् से प्रार्थना की कि हे नंदकुमार और किसलिये मुझे इस असार संसार में जीवित रखते हो—

कौन हेतु राखै संसारा । क्यों न बुलावै नंदकुमारा ।

इस प्रार्थना के पश्चात् यवनों से कहा अब मारो, इस बार मेरा सिर अवश्य कट जाएगा, यवनों ने वार किया । घनआनँद का सिर धड़ से पृथक् हो गया; परंतु रक्त नहीं निकला—

'घनआनंद तन कढयौ न लोहू,
सो चरित्र लखि पर्‌यौ न कोऊ ।'

इस जनश्रुति से दो बातों का परिज्ञान होता है । एक तो घनआनंद सखीभावना के भक्त थे, दूसरे इनकी मृत्यु यवनों के हाथ हुई ।

घनआनँद की जीवनी के संबंध में इससे अधिक विस्तृत रूप में गोस्वामी श्री राधाचरण जी ने अपने एक 'छप्पय' में लिखा है—

दिल्लीश्वर नृप निमित एक धुरपद नहिं गायौ ।
पै निज प्यारी कहे सभा को रीझि रिझायौ ।।
कुपित होय नृप दिए निकास वृंदावन आए ।
परम सुजान सुजान छाप पद कवित बनाए ।
नादिरशाही ब्रज रज मिले किय न नेकु उच्चार मन ।।
हरि भक्ति बेलि सिंचन करी घनआनँद आनंदघन ।।

घनआनँद के साथ सुजान का संबंध था । उसके अनुराग के कारण दिल्ली से उनके निर्वासन की बात स्पष्ट रूप से गोस्वामी राधाचरण जी ने ही प्रथमतः लिखी है । राधाचरण जी के अनुसार जिस दिल्लीश्वर नृपति के लिये ध्रुपद नहीं गाया वह नृपति कौन था, यह स्पष्ट नहीं होता दूसरे, सुजान छाप से पद और कवित्त दोनों बनाने की बात इसमें कही गई है । सही में जो पदावली इनकी उपलब्ध हुई है उसमें सुजान छाप नहीं है । वह केवल कवित्तों में है । तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह स्पष्ट होती है कि कवित्त और पदों के रचयिता एक ही हैं, दो नहीं ।